

स्वर्णमूँद: परिवर्त्यज्य परार्थमनुतिष्ठति।

मिथ्या वर्तते मित्रार्थी यश्च मूँदः स उच्यते॥

**भावार्थ :** अपने कर्तव्यों तथा कार्यों को छोड़कर जो दूसरों के काम पूरे करने वें लग जाता है, अंहकरणस्वरूप्य के उत्तराधिकृत स्वरूप ले लाए हैं और अपने कार्यों की हासिल करता है। यह अपना काम छोड़कर दूसरों के कामों में टांग अड़ाता है तथा जो अपने मित्रों/शुभवितकों/हितवितयों से कपट आवरण करता है वह व्यक्ति मूँद कहा जाता है।











रजत कुमार गुहा

# दो लप्जों की है दिल की .. . . .

दो

लफज भी नहीं  
बोल पा रहे हैं  
भारत के  
प्रधानमंत्री। यह  
उनके चरित्र के अंदर  
की ज़िलक है। वरना  
उन्होंने ही कीपी पूर्व

प्रधानमंत्री डॉ मोहनेन सिंह को मौन मोहन कहा था। अब पेगासस, अडाणी तथा मणिपुर के मुदे पर मौन कहा है, यह तो देश देख समझ रहा है। इसी बजह से भाजपा का भी यह हाल हो गया है कि चूंकि नरेंद्र मोदी नहीं बोल रहे हैं तो दूसरे नेता भी चुप हैं। जिस दिन नरेंद्र मोदी बोलेंगे, उसके बाद से बाकी लोगों की जुबान भी खुल जाएगी। अभी तो सिफर मणिपुर के साथ साथ अन्य राज्यों का उल्लेख कर उन्होंने नीचे से ऊपर तक यह संकेत दिया है कि कितना और क्या बोलना है।

मैन देख रहा है और समझ भी रहा है। मणिपुर का मामला सीबीआई के सुपुर्ट कर दिया गया है।

यानी इस गुदे पर एक दलील तैयार कर ली गयी है कि मामले की जांच चल रही है, इसलिए उस पर बोलना मुनासिब नहीं होगा। और भाई देख के इस मैंगो गैन की जमात को एकदम बुद्ध समझते हो क्या।

यानी इस मुदे पर एक दलील तैयार कर ली गयी है कि मामले की जांच चल रही है, इसलिए उस पर बोलना मुनासिब नहीं होगा। और समझ भी रहा है। मणिपुर का मामला सीबीआई के सुपुर्ट कर दिया गया है।

यानी इस गुदे पर एक दलील तैयार कर ली गयी है कि मामले की जांच चल रही है, इसलिए उस पर बोलना मुनासिब नहीं होगा। और समझ भी रहा है। मणिपुर का मामला सीबीआई के सुपुर्ट कर दिया गया है।

यानी इस गुदे पर एक दलील तैयार कर ली गयी है कि मामले की जांच चल रही है, इसलिए उस पर बोलना मुनासिब नहीं होगा। और समझ भी रहा है। मणिपुर का मामला सीबीआई के सुपुर्ट कर दिया गया है।

एंजेंडा रहा है।



लेकिन साहब को बोलना पड़ेगा, यह बड़ी बात है। भाई लोगों ने साजिश के तहत इंडिया बना दिया तो अब मजबूरी में संविधान से इंडिया शब्द हटाने की मांग होने लगी है। वैसे चुनाव आते आते इंडिया रहेगा या चाल जाएगा, इस बारे में अभी पूर्वक तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता है। इंडी निर्देशकों को 45 दिनों का कार्यविस्तार मिला है। इस बीच कई और नेताओं के खिलाफ हड्डी की कार्रवाई हुई है तो पता नहीं किन्तु टिक पायेंगे। यही और शरद कुमार के सात खुद अभियान बच्चन ने गया है। गीत के बोल कुछ इस तरह हैं।

बोल लप्जों की है, दिल की कहानी या है मोहब्बत, या है जवानी किले की बातों का मतलब न पूछे कुछ और हमसे बस अब न पूछे जिसके लिये है, दुनिया दीवानी या है मोहब्बत, या है है जवानी इस जिंदगी के, दिन किन्तु कम है तो पता नहीं किन्तु है खुशियाँ, और किन्तु गम है भारतीय राजनीति का सच है जो यह बताता है कि हर नेता अपने बेटा बेटी को राजनीति में क्यों स्थापित करने के लिए टिकाये रखने के पीछे को असली एंडोंडा क्या है। इस आरोप से अपने साहब बहादुर मुक्त है पर अडाणी का मसला गले में कटा की तरह फंस गया है।

इसी बात पर प्रसिद्ध फिल्म द ग्रेट मैंबलर फिल्म का एक गीत याद आ रहा है। इसे लिखा था आनंद बक्षी ने और संगीत में डाला था राहुल देव वर्मन ने। इस गीत की विशेषता यह भी है कि इसे आशा भोसले

और शरद कुमार के सात खुद अभियान बच्चन ने गया है। गीत के बोल कुछ इस तरह हैं। बोल लप्जों की है, दिल की कहानी या है मोहब्बत, या है जवानी किले की बातों का मतलब न पूछे कुछ और हमसे बस अब न पूछे जिसके लिये है, दुनिया दीवानी या है मोहब्बत, या है है जवानी इस जिंदगी के, दिन किन्तु कम है तो पता नहीं किन्तु है खुशियाँ, और किन्तु गम है भारतीय राजनीति का सच है जो यह बताता है कि हर नेता अपने बेटा बेटी को राजनीति में क्यों स्थापित करने के लिए टिकाये रखने के पीछे को असली एंडोंडा क्या है। कभी चींवा को लाल आंख दिखाने की बात करते थे तो अब आठ माह बाद राज खुला कि साहब बहादुर को चींवा के चालीस वर्षों से हाथ मिलाकर बात कर आये थे। देश को इस बारे में भी बताने की जहमत नहीं उठायी कि अधिकर हाथ मिलाकर बात कर दिया। यह तय है कि अविवास प्रस्ताव परास्त होगा

जग्मादिन 30 जुलाई के अवसर पर विशेष 64 वर्ष के हुये बॉलिवुड अभिनेता संजय दत्त

बॉ

लीबुड के जानेमाने अभिनेता संजय दत्त आज 64 वर्ष के हो गये। 29 जुलाई 1959 को बुंदेल्ही में जन्मे संजय दत्त को अभिनय की कला विषयता में मिली। उनके पास सुनिल दत्त अभिनेता और मां नरगिस जानी-पानी फिल्म अभिनेत्री थी। घर के कारण संजय दत्त अस्सर अपनी मामा-पिता के साथ शाटिंग देखने जाया करते थे। इस बजह से उनका भी रुस्तान फिल्मों की ओर हो गया और वह भी अभिनेता बनने के खबाब देखने लगे संजय दत्त ने बतार बाल कलाकार अपने सिने करियर की शुरुआत अपने पिता के बैनर तले बनी फिल्म रेशमा और शेरा से की। बतार अभिनेता उन्होंने अपने करियर की शुरुआत वर्ष 1981 में प्रदर्शित फिल्म गंकी से की। दशम निर्देशन पटकथा और गीत-संगीत के कारण फिल्म टिकट खिड़की पर सुराहिट सावित हुयी। वर्ष 1982 में संजय दत्त को निर्माता-निर्देशक सुभाष घई की फिल्म विधाता में काम करने का अवसर होता है।

वर्ष 1982 से 1986 तक का बत्त का बत्त संजय दत्त के सिने करियर के लिये बुरा सावित हुआ। इस दौरान उनकी जानी आह लव यू मै आवाह हूँ, बैकरार, मेरा फैसला, जमीन अस्समान, दो दिलों की बास्तान, मेरा हक और जीवा जैसी कई फिल्में बॉक्स ऑफिस पर असफल हो गयी। हालांकि, वर्ष 1985 में प्रदर्शित फिल्म जान की बाजी टिकट खिड़की पर और सकारात्मक रूप से असफल रही। संजय दत्त की किसिमत का सितारा वर्ष 1986 में प्रदर्शित फिल्म राजेन्द्र कुमार ने अपने पुत्र कुमार गौरव को फिल्म इंडस्ट्री में देखाया स्थापित।



करते के लिये बनायी थी। लेकिन फिल्म में संजय दत्त की भूमिका को दर्शकों को द्वारा ज्यादा पसंद किया गया। फिल्म की सफलता के साथ ही संजय दत्त एक बार फिल्म से देखने लगा तो नारा गौरव लिए हुए एक बड़ी टीम भी है। पता नहीं क्योंकि लोकसभा चुनाव से पहले इतना टेंशन दे रहे हैं। अजय साहब दो लफज बोल ही देते तो इतना सारा झंगाट तो नहीं होता। अब आपका अंडकार अपर सर चाहूर बोल रहा है को देश का आम आदमी क्या कर सकता है। हम तो सिर्फ सलाह ही दे सकते हैं कि जिस तरह मनमोहन सिंह ने निर्भया कांड के बाद माफी मांगी थी। आप भी माफी मांग ही लो। पहले अटल बिहारी बाजपेयी थे तो आपको बचा लिया था। अब उसका चुनायी टेंशन लगा लिया। अब अटल बिहारी बाजपेयी को जीवन से बाहर करने की भूमिका मांग ही लो। पहले अटल बिहारी बाजपेयी को जीवन से बाहर करने की भूमिका मांग ही लो।

करते के लिये बनायी थी। लेकिन फिल्म में संजय दत्त की भूमिका को दर्शकों को द्वारा ज्यादा पसंद किया गया। फिल्म की सफलता के साथ ही संजय दत्त एक बार फिल्म से देखने लगा तो नारा गौरव लिए हुए एक बड़ी टीम भी है। पता नहीं क्योंकि लोकसभा चुनाव से पहले इतना टेंशन दे रहे हैं। अजय साहब दो लफज बोल ही देते तो इतना सारा झंगाट तो नहीं होता। अब आपका अंडकार अपर सर चाहूर बोल रहा है को देश का आम आदमी क्या कर सकता है। हम तो सिर्फ सलाह ही दे सकते हैं कि जिस तरह मनमोहन सिंह ने निर्भया कांड के बाद माफी मांगी थी। आप भी माफी मांग ही लो। पहले अटल बिहारी बाजपेयी थे तो आपको बचा लिया था। अब उसका चुनायी टेंशन लगा लिया। अब अटल बिहारी बाजपेयी को जीवन से बाहर करने की भूमिका मांग ही लो।

वर्ष 1991 में प्रदर्शित फिल्म सड़क संजय दत्त के सिने करियर की महत्वपूर्ण फिल्मों में शुभार की जाती है। महेश भट्ट के निर्देशन में बड़ी इस फिल्म में संजय दत्त के अधिनय को एक बास्तविक घटना देखने के लिये नारा गौरव लिए हुए एक नये अंदाज में खेले किया गया। फिल्म में अपने दमदार अधिनय के कारण वह अपने करियर में पहली बार सर्वश्रेष्ठ अभिनेता बन गया। वर्ष 1993 में प्रदर्शित फिल्म खलनायक संजय दत्त के सिने करियर की सुरक्षित फिल्मों में शुभार की जाती है। डेविड धनन निर्देशक ने उनकी मारडांडा वाली छिपी को छोड़ दिया। इस फिल्म में संजय दत्त के अधिनय का नाम रूप देखने की मिलेगी। इस फिल्म में उन्हें एक नये अंदाज में खेले किया गया। फिल्म से पहले उनके बारे में यह धारणा थी कि वह केवल संजीवा या मारडांडा वाली भूमिकाएं ही जाती है। फिल्म में संजय दत्त के अधिनय का नाम रूप देखने के लिये नारा गौरव लिए हुए हैं। तो आम जनता भी उनसे पीछे काढ़ रही है। वैसे तो आम जनता को तो पता ही नहीं है कि विषय क्या है और जानकर भी क्या करना है। राजनीति और समाजशास्त्र से लेकर स्ट्रिंग थ्योरी तक में उनका दखल होगा। पाठकों को लाग रहा होगा कि हम विषय से भटक जाते हैं। क्या करें विषय से भटकने की परंपरा का निर्वाह जो करना है। सारे देश का यही होता है, नेताणग यदि विषय से भटके बातें में महारत हासिल है, फिर भी...। अब आप ये बताएँ इस देश में बातें बातें बताने में किसे महारत हासिल नहीं है। राह चलते आपको ऐसे लोगों ने जारी किए हैं जो हर विषय के साथ-साथ बातें करने में भी विशेषज्ञ होंगे।

राजनीति और समाजशास्त्र से लेकर स्ट्रिंग थ्योर













# मुहर्म का जुलूस मातम में तब्दील चार नौजवानों की मौत के लिए जिम्मेदार कौन, क्यों नहीं काटी गई थी बिजली



## राष्ट्रीय खबर

**रांची/बाकारो:** बाकारो में मुहर्म का जुलूस मातम में तब्दील हो गया। चार नौजवान जान गंवा बैठे। एक की हालत गंभीर बनी हुई है। अच्छी बात है कि पांच घायल अब खतरे से बाहर हैं। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि हादसा कैसे हुआ। दूसरा सवाल है कि हादसे के लिए जिम्मेदार कौन है। इस सवालों की पहुंचतावनी करने पर कई बाँकोंने बाली बातें सामने आई हैं। बाकारो के गोपनीय, तेज्घाट के कार्यालयक अधिवक्ता समीर कुमार का दावा है कि खेतकों गांव के लोगों ने तजिया जुलूस निकालने की जानकारी दी ही नहीं थी। उनके मुताबिक उसी गांव में बिजली विभाग के मिस्री मुमताज भी रहते हैं। उन्हें भी इसकी जानकारी नहीं थी।

कार्यालयक अधिवक्ता के

मुताबिक सुबह 5:15 बजे घटना घटी है। तजिया के सटरे ही ऑटोमेटिक लाइन डिस्कनेक्ट हो गया था। जहां हादसा हुआ है उस इलाके में डीवीसी से बिजली लेने गोपनीय के कथारा पावर हाउस से सप्लाई की जाती है। जहां-जहां से जुलूस की सूचना दी जाती है ताकि जिला विभाग की बिजली की जाती है। कार्यालयक अधिवक्ता का दावा है कि उन्होंने कई बाँकोंने बाली बातें सामने आई हैं। बाकारो के गोपनीय, तेज्घाट के कार्यालयक अधिवक्ता समीर कुमार का दावा है कि खेतकों गांव के लोगों ने तजिया जुलूस निकालने की जानकारी दी ही नहीं थी। उनके मुताबिक उसी गांव में बिजली विभाग के मिस्री मुमताज भी रहते हैं। उन्हें भी इसकी जानकारी नहीं थी।

परिजनों को प्रति परिवार दो लाख रुपए का मुआवजा दिया जा रहा है। बिधायकों ने बिजली की डीसी कुलदीप चौधरी ने बिजली के लिए लोग घायलों को बोकारो और गोपनीय अस्पताल में ले गये। वहां के लोग घायलों को बोकारो और गोपनीय अस्पताल के पास बीटीपीएस और अस्पताल के पास बीटीपीएस और अस्पताल में ले गये। वहां प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए बोकारो जेनरल अस्पताल रेफर कर दिया गया। लेकिन बीजीपूर में इलाज के दौरान चार युवाओं की मौत हो गई। फिलहाल एक युवक को आईसीयू में रखा गया है। शेष पांच लोगों के अंतम सस्कर, मुआवजा और घायलों के इलाज पर केंद्रीत है। उन्होंने बिजली के सुबह के वक्त खेतकों के लोगों ने बिना सूचना दिए तजिया निकाल दिया और तजिया का एक हिस्सा 11 हजार बोल्ट वाले बिजली तार से जा सदा। उनके मुताबिक विभाग की तरह से मृतक के

रणधीर कुमार सिंह ने बताया कि अचानक तेज पावर का कारंट लगाने से दिल की गति प्रभावित हो जाती है। हार्ट के पैपर करने का शक्ति कम हो जाती है। शरीर में फ्लूट और कमी हो जाती है।

मरीज इस अवस्था को मेडिकल टर्म में बैंडीकुलर कैबिलेशन कहा जाता है। ऐसे समय में मरीज को स्लोइन चढ़ाकर हार्ट से जुड़ी दवाईयां दी जाती हैं। लेकिन कई मरीज इस झटके से रिकवर नहीं हो पाते हैं। इसकी वजह से जान चली जाती है। आमतौर से बातचीज करने पर पता चला कि किसी भी मुरिलम बहुत गांव में अलग-अलग टोलों के लोग चाहते हैं कि उनके टोले का तजिया सबसे ज्यादा आकर्षक हो। इनके लिए टोल स्तर पर एक प्रतियोगिता सी बनी रहती है। दिन-रात मेहनत करके लोग तजिया को सजाते हैं।

दौर था जब बांस और कपड़ों का इस्तेमाल नहीं हुआ होता तो संभव जाता था। लेकिन अब बड़ा तजिया बनाने के लिए लोह के रोड और फ्रेम का इस्तेमाल किया

शर्ति और शोकाकुल परिजनों को दुख की बड़ी सहन करने की शक्ति की कमाना की है। सीएम के मुताबिक जिला प्रशासन को देखरेख में घायलों का इलाज चल



जाने लगा है। कई तरह के बताया है कि जुलूस के दौरान दुर्घटना में चार लोगों की मौत हो रहा है। उन्होंने सभी घायलों के

दौरान रहे थे। इस दौरान होने लगा

बताया है कि जुलूस के दौरान दुर्घटना में चार लोगों की मौत हो रहा है। उन्होंने लिए जल्द स्वास्थ्य लाभ की

कामना की है।



## कड़ी सुरक्षा के बीच राजधानी में निकला मोहर्म जुलूस, देशभक्ति की दिखी हर तरफ झलक



## राष्ट्रीय खबर

**रांची:** पूरे राज्य में मोहर्म मनाया जा रहा है। जगह-जगह जुलूस निकाले जा रहे हैं। राजधानी रांची में भी मोहर्म मनाया जा रहा है। मोहर्म जुलूस को लेकर राजधानी में पुलिस ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की है। जिसके बीच रांची के विभिन्न क्षेत्रों से मोहर्म का जुलूस निकला। बच्चे बूढ़े नौजवान सभी मोहर्म के जुलूस में शामिल हुए। इस दौरान राजधानी में पुलिस की व्यवस्था बेहद दुरुस्त दिखी। इस

दौरान जुलूस में देशभक्ति की झलक देखने मिली बता दें कि हजरत इमाम हुसैन और उनके साथियों की शहादत की याद में मोहर्म मनाया जाता है। इस दिन मुरिलम समाज के लोगों द्वारा इस दौरान के अंतिम सस्कर, मुआवजा और घायलों के इलाज के लिए लोग जाने वाले लोगों के अंतिम दावा हो रहा है। उन्होंने बिजली के सुबह के वक्त खेतकों के लोगों ने बिना सूचना दिए तजिया निकाल दिया और तजिया का एक हिस्सा 11 हजार बोल्ट वाले बिजली तार से जा सदा। उनके मुताबिक विभाग की तरह से मृतक के वक्त



e-mail (bangla) : rashtriyokhobor@gmail.com  
<http://rashtriyakhabar.com/epaper>  
e-mail : rastriyakhabarhn@gmail.com  
web : [www.rashtriyakhabar.com](http://www.rashtriyakhabar.com)  
 Rashtriya khabar  
 Rashtriyakhabar LIVE [jatiyokhobor.co.in](http://jatiyokhobor.co.in)

Visit us @ Ph.  
0651-2244505  
0651-2244605

